ISSN 0975-8321

वाङ्मय

(त्रैमासिक हिन्दी पत्रिका)

Peer Reviewed Journal
(Impact Factor 5.125)

सम्पादक
डॉ. एम. फ़ीरोज़ अहमद

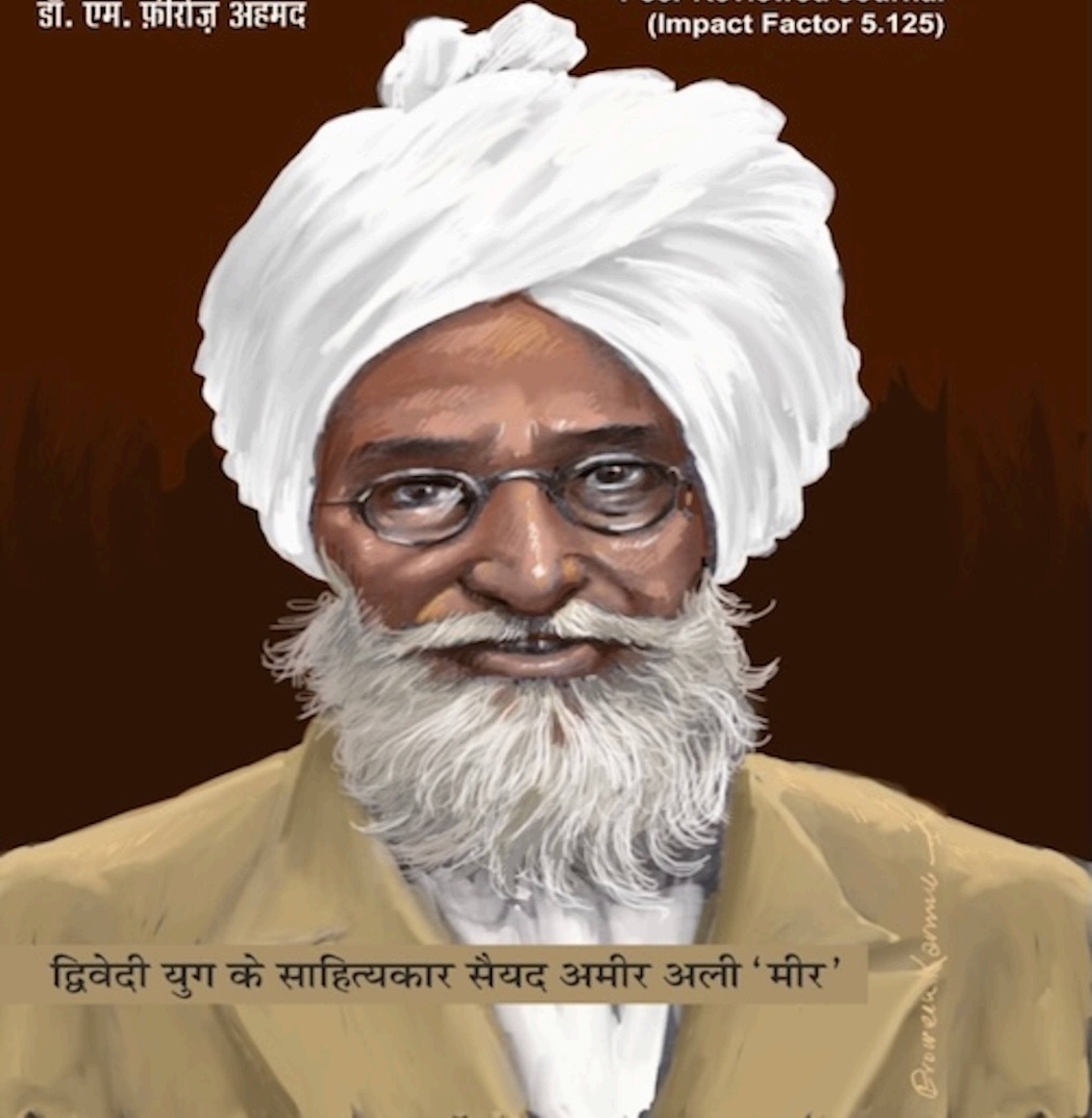

द्विवेदी युग के साहित्यकार सैयद अमीर अली 'मीर'

ISSN 0975-8321

वाङ्मय त्रैमासिक

वर्ष : 23 अप्रैल–सितम्बर (संयुक्तांक) 2025

सम्पादक
डॉ. एम. फ़ीरोज़ अहमद
मोबाइल : 9044918670

सलाहकार सम्पादक
प्रो. मेराज अहमद
(ए.एम.यू. अलीगढ़)

परामर्श मण्डल
प्रो. रामकली सराफ(वाराणसी)
डॉ. शगुफ़्ता नियाज़ (अलीगढ़)

सम्पादकीय सम्पर्क
205- फेज-1, ओहद रेजीडेंसी,
नियर पान वाली कोठी,
दोदपुर रोड, सिविल लाइन, अलीगढ़-202002
मोबाइल : 7007606806
E-mail : vangmaya@gmail.com

इस अंक का मूल्य–300/–

सहयोग राशि :
द्विवार्षिक शुल्क व्यक्तिगत/संस्थाओं के लिए : 800 रुपए

सह–सम्पादक

डॉ. मोहम्मद आसिफ खान

पुनरावलोकन समिति

- प्रो. मेराज अहमद, हिन्दी विभाग, ए.एम.यू. अलीगढ़
- प्रो. इकरार अहमद, प्राचार्य, विवेकानंद ग्रामद्योग महाविद्यालय, दिबियापुर, औरैया

कानूनी सलाहकार

एम. एच. खान, एडवोकेट(हाईकोर्ट, इलाहाबाद)

एम. ए. खान, एडवोकेट(हाईकोर्ट, इलाहाबाद)

सम्पादन/संचालन

अनियतकालीन, अवैतनिक और अव्यावसायिक।

रचनाकार की रचनाएँ उसके अपने विचार हैं।

रचनाओं पर कोई आर्थिक मानदेय नहीं दिया जाएगा।

लेखकों, सदस्यों एवं मित्रों के आर्थिक सहयोग से पत्रिका प्रकाशित होती है।

उनसे सम्पादक-प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है।

किसी भी विवाद के लिए न्याय क्षेत्र अलीगढ़ होगा।

रचनाकारों से......

○ रचनाएँ कृतिदेव 10 में टाइप कराकर ही भेजें। ○ डाक टिकट लगा लिफाफा साथ आने पर ही अस्वीकृति रचना लौटायी जा सकती है अन्यथा नष्ट कर दी जाएगी। ○ कृतियों की समीक्षा के लिए पुस्तक की दो प्रतियाँ भेजना अनिवार्य है। ○ नमूना प्रति अवलोकन के लिए 300 रुपये भेजना अनिवार्य है। ○ हिन्दी साहित्य की विविध विधाओं की रचनाओं का वाङ्मय स्वागत करता है।

शुल्क भेजने का पता

मनीआर्डर या बैंक ड्राफ़्ट : *'डॉ. फ़ीरोज़ अहमद' या 'वाङ्मय'* के नाम

205- फेज-1, ओहद रेजीडेंसी, नियर पान वाली कोठी, दोदपुर रोड, सिविल लाइन, अलीगढ़-202002

डॉ. एम. फ़ीरोज़ अहमद की ओर से डॉ. एम. फ़ीरोज़ अहमद द्वारा प्रकाशित, डॉ. एम. फ़ीरोज़ अहमद द्वारा मुद्रित तथा नवमान आफसेट प्रिंटर्स अलीगढ़ में मुद्रित एवं ई-3, अब्दुल्लाह क्वाटर्स, लाल बहादुर शास्त्री मार्ग अलीगढ़ से प्रकाशित।

सम्पादक- डॉ. एम. फ़ीरोज़ अहमद

सम्पादकीय

हिंदी के साथ मुसलमानों का घनिष्ठ सम्बन्ध प्राचीन काल से वर्तमान समय तक अक्षुण्ण रहा है। इतना ही नहीं, वे हिंदी साहित्य सर्जन में भी सक्रिय सहयोग देते रहे हैं। फलस्वरूप अब्दुल रहमान, जायसी, कुतुबन से लेकर इस परम्परा में सैकड़ों मुसलमान कवियों और लेखकों ने अपनी रचनाओं द्वारा हिंदी साहित्य को समृद्ध किया है। यह परम्परा अबाध गति से प्रवाहित हो रही है। हिंदी के आधुनिक मुसलमान कवियों में सैयद अमीर अली 'मीर' का सर्वोच्च स्थान है। इनका जन्म मध्य प्रदेश के सागर जिला के देवरी नामक गाँव में 22 अक्टूबर 1873 ई. हुआ था। बाल्यकाल में आपके पिता जी का देहान्त हो गया था। उनका लालन-पालन उनके चाचा की देख-रेख में हुआ था। सम्वत् 1949 में नार्मल स्कूल की परीक्षा जबलपुर से उत्तीर्ण कर अंजुमन इस्लामिया हाई स्कूल, जबलपुर में ड्राइंग के टीचर हो गए थे, बाद में अपनी शिक्षा को बढ़ाने के नज़रिये से जे.जे. स्कूल ऑफ आर्ट्स, बम्बई में दाख़िला ले लिया लेकिन बीमारी के कारण वहाँ से वापस चले आये और अपने चाचा के कारोबार में हाथ बंटाने लगे। अपने अध्यवसाय के बल पर ये क्रमशः डिप्टी इंस्पेक्टर, पुलिस इंस्पेक्टर और तहसीलदार के पद तक पहुँच गये लेकिन किसी कारणवश नौकरी से इस्तीफ़ा देना पड़ा था।

आपने सर्वप्रथम अपने काव्य-जीवन का प्रारम्भ 'लोभ ते अमी के अहि, चढ्यौ जात चन्द पै' समस्या की पूर्ति करके किया था। आप कविता की ओर किस प्रकार आकर्षित हुए इस सम्बन्ध में आपने यों वर्णन किया है, ''सन् 1894 में एक दिन देवरी में अपने चाचा की दुकान पर बैठा हुआ था कि रमजान खाँ नामक एक कांस्टेबल मेरे पास 'श्री वेंकटेश्वर समाचार' की एक प्रति लिये हुए आया, जिसमें 'कवि समाज सागर' की ओर से यह सूचना छपी थी कि जो व्यक्ति 'लोभ ते अमी के अहि, चढ्यौ जात चन्द पै' समस्या की पूर्ति करेगा उसे 'छन्द प्रभाकर' नामक ग्रन्थ पुरस्कार में मिलेगा।''

आपने उक्त समस्या की पूर्ति इस प्रकार की थी—

सीता राम ब्याह को उछाह अवलोकि सब,
जनक समाज बलि जात सुख कन्द पै।

x x x

उपमा तहँ ऐसी मन आई कवि 'मीर' मानो,
लोभ ते अमी के अहि चढ्यौ जात चन्द पै।।

एक हिन्दुस्तानी मुस्लिम कवि की इस पहली रचना में विशुद्ध हिन्दुत्व के जो भाव प्रस्फुरित हुए, वे वास्तव में आश्चर्यजनक हैं। आपकी हिंदी-निष्ठा के सम्बन्ध में साहित्यकार ज़हूर बख़्श 'हिन्दी कोविद' ने लिखा था, ''वे एक प्रकार से हिंदी-संसार में

मुस्लिम जगत् के प्रतिनिधि कवि थे। जब मुस्लिम समाज में हिन्दी के प्रति विद्रोह की भावनाएँ जोर पकड़ रही थीं, तब वे उसकी सेवा करने के लिए अग्रसर हुए थे और उन्होंने यथाशक्ति उस विद्रोह का मुकाबला किया था।''

सन् 1906 ई. से इनकी कवितायें 'सरस्वती' पत्रिका में स्थान पाने लगी थीं। इस पत्रिका में प्रकाशित इनकी प्रथम कविता की कुछ पंक्तियाँ–''आगे का भी वस्तु विकार।/पावेगा मुझसे संसार।।/सब पर सब मेरा अधिकार।/नमन करे मुझको संसार।।''

आपने देवरी में सम्वत् 1952 में 'मीर मण्डल कवि समाज' की स्थापना की और उसके माध्यम से अनेक कवियों और लेखकों की प्रतिभा को निखारा था।

आपके 'मातृभाषा की महत्ता' शीर्षक निबन्ध पर आचार्य महावीरप्रसाद जी ने सौ रुपए का पुरस्कार भी प्रदान किया था। 'रामचरितमानस' इन्हें बड़ा प्रिय था और वे हिंदी को राजभाषा बनाने के पक्षपाती थे। 'रसिक कवि समाज कानपुर' और 'कवि समाज सीतापुर' की ओर से 'साहित्य-रत्न' तथा 'काव्य-रसाल' की सम्मानोपाधियाँ प्रदान की गई थीं। 'सरस्वती', 'हिन्दुस्थानी', 'लीडर', 'विशाल-भारत', 'प्रेमा', 'जैन हितैषी', 'कर्मवीर', 'रतलाम-टाइम्स' और 'हिन्दी साहित्य सम्मेलन पत्रिका' जैसी विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में उनके जीवन की झाँकी एवं रचनाएँ प्रकाशित होती रहीं। आपकी ऐसी रचनाओं में 'सूर्य', 'सन्ध्या', 'उलाहना पंचक', 'अन्योक्ति सप्तक', 'दशहरा' तथा 'कृष्णाष्टमी' आदि अत्यन्त लोकप्रिय हैं। आपकी रचनाओं में 'बूढ़े का ब्याह' के अतिरिक्त 'नीति दर्पण', 'सदाचारी बालक', 'काव्य-संग्रह' तथा 'लेख-माला' आदि प्रमुख हैं। अपने जीवन के अन्तिम दिनों में आप महात्मा शेखसादी की अत्यन्त ख्याति-प्राप्त कृतियों 'गुलिस्ताँ' और 'बोस्ताँ' का हिन्दी पद्यानुवाद कर रहे थे।

19 जनवरी 1937 को अकस्मात् एक दुर्घटनावश इनकी इहलीला समाप्त हो गई। मीर साहब की मृत्यु के पश्चात् वर्षों उनकी विधवा पत्नी हैदराबाद के किसी नवाब के यहाँ जूठे बर्तन माँजकर अपना उदर-पोषण करती रही।

देवनागर पत्रिका में सैयद अमीर अली 'मीर' की कई रचनाएं प्रकाशित हुई थीं लेकिन पत्रिका उपलब्ध नहीं हो पाई। एक साल में यानी प्रथम वर्ष में सात रचनाएं–अंक-1 में देवनागरान्योक्ति पंचक (हिंदी कविता), अंक-3 में बादशाहों को अपना शिनाख्त कराना मुश्किल पड़ता है (उर्दू), अंक-6 में वनस्पति तेल(मराठी), अंक-7 में शुर्फा की औलाद (उर्दू कविता), अंक-8 में मुँहदेखी(हिन्दी), अंक-11 में एक नसीहत(हिन्दी), मदह मुल्क हिन्दुस्तान(उर्दू) रचनाएँ छपी थीं।

प्रस्तुत अंक में कुछ सामग्री प्रो. कान्तिकुमार जैन की पुस्तक– सैयद अमीर अली 'मीर' से साभार ली गई है। माधवराव सप्रे संग्रहालय के निदेशक श्री विजयदत्त श्रीधर का और इस अंक में जिन-जिन लोगों ने सहयोग दिया उन सभी का धन्यवाद।

अनुक्रम

सम्पादकीय/3

खण्ड-क (परिचय/संस्मण एवं अन्य)

1. सैयद अमीर अली 'मीर'/9
क्षेमेन्द्र सुमन

2. 'मीर' और उनका मण्डल/12
प्रो. कान्तिकुमार जैन

3. मीर और मीर मंडल/30
डॉ. ब्रजभूषण सिंह 'आदर्श'

4. सैयद अमीर अली 'मीर'/36
विनयमोहन शर्मा

5. मीर साहब/42
माखनलाल चतुर्वेदी

6. स्वर्गीय सैयद अमीर अली साहब 'मीर'/61
ज़हूर बख़्श

7. स्व. सैयद अमीर अली 'मीर' बनाम हिंदी जनता/81
योगींद्र नारायण 'वृष्णि'

8. सैयद अमीर अली 'मीर'/86
परमानंद पांचाल

9. पं. माखनलाल जी के गुरु/90
विनय मोहन शर्मा

10. हिन्दी के मीर/96
सैयद क़ासिम अली

11. 'मीर' ने देवरी क्यों छोड़ी?/100

प्रो. कान्ति कुमार जैन

12. एक कहानी का नाटक/105

ऋषि जैमिनी कौशिक बरुआ

13. मीर कवि/108

पद्मश्री मुकुटधर पाण्डेय

14. कवि की गौरवमयी जन्मभूमि देवरी! जहाँ बच्चे साहित्यिक प्रतिभा.../110

बैजनाथप्रसाद दुबे

15. सैयद अमीर अली 'मीर'/112

रामबहोरी शुक्ल/भगीरथ मिश्र

16. सैयद अमीर अली 'मीर'/114

रामनरेश त्रिपाठी

खण्ड-ख (काव्य)

17. बूढ़े का ब्याह/117

18. देवनागर अन्योक्ति/147

19. भारतीय छात्रों से नम्र निवेदन/148

20. अन्योक्ति-सप्तक/149

21. उत्साह/151

22. आज और कल/153

23. सदुपदेश/155

24. काल की आत्म-कहानी/157

25. नवयुवक-कर्त्तव्य/162

26. विधवाओं का मंगलगान/164

27. याचना/169

28. माखनलाल चतुर्वेदी-मीर/104

खण्ड–ग (कहानी)

29. धूपछाँह/170

30. एक दुखी की आत्म–कहानी/179

31. आदर्श कुल–वधू/191

32. मनमोहिनी/207

33. सती रेणुकादेवी/217

खण्ड–घ (निबंध/लेख/अनुवाद/पत्र/समीक्षा)

34. मातृ–भाषा की महत्ता/227

35. हिन्दी और मुसलमान/256

36. हिन्दी साहित्य और मुसलमान/281

37. क्या उर्दू हिंदी से भिन्न कोई भाषा है/295

38. प्रांतीय हिन्दी पाठ्य पुस्तकों की भाषा पर सम्मति/301

39. प्रारम्भिक शिक्षा/307

40. मोहर–मीमांसा/319

41. नवयुवकों का कर्त्तव्य/333

42. सुलतान सलाहुद्दीन/338

43. 'मीर' के पत्र / 'मीर' को पत्र/345

44. बी. एल. आच्छा–अनमेल विवाह की त्रासदी: बूढ़े का ब्याह/389

45. डॉ. सरोजनी अग्रवाल–बूढ़े का ब्याह/398

खण्ड–ड. (विविध)

46. प्रो. सुमन सिंह–गुरु गोरखनाथ और नाथ साहित्य/402

47. जिज्ञासा मिश्रा–अमरकांत के उपन्यासों में जीवन मूल्य/409

48. हिमांशी यादव–'माई' उपन्यास में पितृसत्ता एवं स्त्री–प्रतिरोध के स्वर/414

49. डॉ. के. आशा–हिन्दी उपन्यासों में वृद्ध व्यक्ति का मूल्यांकन/419

50. डॉ. प्रियंका कुमारी–वृद्ध जीवन की त्रासदी/424

51. अनुभूति यादव–समकालीन हिन्दी उपन्यासों में आदिवासी नारी की सामाजिक स्थिति/429

हिन्दी सेवी सम्मान के अन्तर्गत कृति सम्मान
सैयद अमीर अली 'मीर' पुरस्कार

लेखक/कवि	वर्ष
श्रीमती रंजना चिलते	2004
डॉ. रूपकुमार 'घायल'	2005
डॉ. निशिकान्त कोचकर	2006
श्रीमती अलका रिसवुड	2007
श्रीमती कुलतार कौर कक्कड़	2009
श्रीमती बी. मीरा अय्यर	2009
अन्ना माधुरी तिर्की	2010
आसूदो लछवानी	2011
श्री राजेन्द्र नागदेव	2012
श्रीमती देवी नागरानी	2013
सुश्री परवनी सबा	2014
श्रीमती शालिनी इन्दौरकर	2016
डॉ. इला घोष	2017
श्रीमती कोमल वाधवाणी 'प्रेरणा'	2018
श्रीमती अनघा जोगलेकर	2019
श्री संतोष सुपेकर	2020

सैयद अमीर अली 'मीर'

क्षेमेन्द्र सुमन

आपका जन्म मध्य प्रदेश के सागर जनपद के देवरी नामक स्थान में 22 अक्टूबर सन् 1873 को हुआ था और अपने जीवन के अन्तिम दिनों में आप छत्तीसगढ़ के भाटापारा (रायपुर) नामक स्थान में जा बसे थे। आप जब केवल 2 वर्ष के ही थे तब आपके पिता मीर रुस्तम अली का देहावसान हो गया था। फलस्वरूप आपका पालन-पोषण एवं शिक्षण आपके चाचा मीर रहमत अली की देख-रेख में हुआ था। पहले-पहल आप जबलपुर से नार्मल की परीक्षा उत्तीर्ण करके वहाँ के 'अंजुमन इस्लामिया हाई स्कूल' में 'ड्राइंग-टीचर' हो गए तथा बाद में अपनी योग्यता बढ़ाने की दृष्टि से आपने बम्बई के 'जे. जे. स्कूल ऑफ आर्ट्स' में प्रवेश ले लिया। वहाँ पर आँखों में कष्ट हो जाने के कारण आप पढ़ाई बीच में ही छोड़कर जबलपुर वापिस लौट आए। यहाँ पर भी जब आपकी आँखों का कष्ट बराबर बना रहा तब आप अपनी नौकरी छोड़कर देवरी चले गए और अपने चाचा की दुकान पर ही कार्य करने लगे।

देवरी में रहते हुए आपका रुझान हिन्दी-कविता की ओर हुआ, जो धीरे-धीरे हिन्दी के सुप्रसिद्ध साहित्यकार श्री जगन्नाथप्रसाद 'भानु' द्वारा संस्थापित 'भानु समाज' के सम्पर्क से और भी परिपुष्ट हो गया। आपने सर्वप्रथम अपने काव्य-जीवन का प्रारम्भ 'लोभ ते अमी के अहि, चढ्यो जात चन्द पै' समस्या की पूर्ति करके किया था। आप कविता की ओर किस प्रकार आकर्षित हुए इस सम्बन्ध में आपने यों वर्णन किया है— ''सन् 1894 में एक दिन मैं देवरी में अपने चाचा की दुकान पर बैठा हुआ था कि रमजान खाँ नामक एक कांस्टेबल मेरे पास 'श्री वेंकटेश्वर समाचार' की एक प्रति लिये हुए आया, जिसमें 'कवि समाज सागर' की ओर से यह सूचना छपी थी कि जो व्यक्ति 'लोभ ते अमी के अहि, चढ्यौ जात चन्द पै' समस्या की पूर्ति करेगा उसे 'छन्द प्रभाकर' नामक